चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	07.07.2021	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा और जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की सीओएच 160 किस्म : प्रो. काम्बोज

प्रदेश हेतु वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच-160 : प्रो. काम्बोज

हिसार, 6 जुलाई (राजकुमार) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच-160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकने व अधिक शर्करा वाली किस्म : कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है,

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो।

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा व जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच-160

सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है जो इनके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है। जल्दी पकने के कारण मिलों में भी इसके लिए शुरुआत से ही अधिक मांग रहती है। इस किस्म के रोपण के 300 दिनों में ही चीनी का अंश उच्च स्तर का (18.55 प्रतिशत) होता है, जिससे प्रति हेक्टेयर 11.36 टन व्यावसायिक गन्ना चीनी प्राप्त होती है।

किस्म विकसित करने में इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : इस किस्म को विकसित करने में डॉ. ए.एस. मेहला, डॉ. एस.पी. कादियान और डॉ. एम.सी. कंबोज (अखिल सहयोगियों) में डॉ. एस.एस. ढेंगीरा, डॉ. राकेश मेहरा, डॉ. समर सिंह, डॉ. विनय कुमार, डॉ. मेहर चंद, डॉ. रत्न सिंह और डॉ. प्रदीप सहरावत शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म को अनुमोदित करवाने व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल को वर्ष 2017-18 व 2018-19 में अखिल भारतीय समन्वित गन्ना अनुसंधान परियोजना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा गन्ना अनुसंधान में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	06.07.2021	--	--

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी के वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	07.07.2021	--	--

प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकने व अधिक शर्करा वाली किस्म

कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है जो लाल सड़न, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह चोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है जो इनके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है। जल्दी पकने के कारण मिलों में भी इसके लिए शुरुआत से ही अधिक

> कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा और जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

मांग रहती है। किस्म की खासियत के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि सीओएच 160 किस्म का तना मध्यम आकार का मोटा होता है जिसमें चार फुटाव होता है। इसकी पत्तियां गहरी हरी व मध्यम चौड़ी एवं धारों किनारों होती है और इसके पत्ते झुके हुए होते हैं। इसमें पोरिया के आकार के इंटरनोड्स होते हैं। इसका तना ठोस होता है जिसमें छेद न के बराबर होते हैं जिससे इसमें रस की मात्रा अधिक होती है। इस किस्म की 838 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसतन पैदावार आंकी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग	07.07.2021	--	--

प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160: कुलपति

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा और जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

838 क्विंटल तक आंकी गई है प्रति हेक्टेयर औसतन पैदावार

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	06.07.2021	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने गन्ने की उन्नत किस्म की विकसित

हिसार:05 जुलाई/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है। कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है जो लाल सड़न, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह चोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है जो इसके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है। जल्दी पकने के कारण मिलों में भी इसके लिए शुरुआत से ही अधिक मांग रहती है। इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एमआर मेहला, डॉ. एससी कादियान और डॉ. एसके कम्बोज जबकि सहयोगियों में डॉ. एमआर सेहरावत, डॉ. राकेश मेहरा, डॉ. अमर सिंह, डॉ. विक्रम कुमार, डॉ. मेहर चंद, डॉ. रण सिंह और डॉ. सरोज जयपाल शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर काम्बोज ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि सीओएच 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो शरद ऋतु और बसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में विकसित की गई एनपीके की मात्रा 25 प्रतिशत तक अधिक डाल सकते हैं ताकि उत्पादन अधिक हासिल हो सके। यदि इसे व्यापक पंक्ति अंतर में रोपण किया जाता है तो यह यांत्रिक कटाई के लिए भी उपयुक्त किस्म है। यह लाल सड़न और अन्य बीमारियों के प्रचलित रोग के लिए प्रतिरोधी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	07.07.2021	--	--

प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 : प्रो. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	06.07.2021	--	--

838 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार देती है गन्ने की सीओएच-160 किस्म : प्रो. काम्बोज

चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकने व अधिक शर्करा वाली किस्म

शरद व बसंत दोनों में ले सकते हैं फसल

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ज्योति दर्पण	07.07.2021	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा और जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7.7.24	1	1-8

एचएयू ने विकसित की जल्द पकने और उच्च शर्करा वाली गन्ने की किस्म

विशेषज्ञ बोले- दोनों सीजन में बो सकेंगे

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है, जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की

वीसी प्रो. कांबोज बोले- प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 किस्म

838 क्विंटल तक आंकी गई है प्रति हेक्टेयर औसतन पैदावार

'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

विवि के कुलपति बीआर कांबोज ने बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-

पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है, जो लाल सड़न, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह चोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई थी। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है, जो इसके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है। इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एमएस मेहला, डॉ. एसपी कादियान और डॉ. एमसी कंबोज, अन्य सहयोगियों में डॉ. एचआर सेतिया, डॉ. राजेश मेहरा, डॉ. समर सिंह, डॉ. विजय कुमार, डॉ. मेहर चंद, डॉ. एन सिंह और डॉ. मनोज जयपाल शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म को अनुमोदित कराने व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

किस्म की खासियत

- सीओएच 160 किस्म का तना मध्यम आकार का मोटा होता है, जिसमें बड़ कुशन होता है। इसकी पत्तियां गहरी हरी व मध्यम चौड़ी पत्ती वाली बैंगनी होती हैं और इसके पत्ते झुके हुए होते हैं। इसकी पोरियां बेलनाकार के इंटरनोड्स होते हैं। इसका तना ठोस होता है, जिसमें छेद न के बराबर होते हैं, जिससे इसमें रस की मात्रा अधिक होती है।
- इस किस्म की 838 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसतन पैदावार आंकी गई है। इसके अलावा यह किस्म गिरती नहीं है और मोढी फसल भी ली जा सकती है। इस किस्म के रोपण के 300 दिनों में ही खांड का अंश उच्च स्तर का (18.55 प्रतिशत) होता है, जिससे प्रति हेक्टेयर 11.56 टन वाणिज्यिक गन्ना चीनी प्राप्त होती है।
- सीओएच 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो शरद ऋतु और बसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में सिफारिश की गई एनपीके की मात्रा 25 प्रतिशत तक अधिक डाल सकते हैं, ताकि उत्पादन अधिक हासिल हो सके।
- इसे व्यापक पंक्ति अंतर में रोपण किया जाता है तो यह यांत्रिक कटाई के लिए भी उपयुक्त किस्म है।
- यह लाल सड़न और अन्य बीमारियों के प्रचलित रोग के लिए प्रतिरोधी है।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	07.07.2021	--	--

प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की किस्म सीओएच 160 : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

By Suresh Saharan · July 6, 2021

कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

एचआर ब्रेकिंग न्यूज़। हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की [illegible] अगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित [illegible] बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

किसानों की आवश्यकतानुसार [illegible] : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	7.7.21	1	2-8

एचएयू ने विकसित की गन्ने की नई किस्म, मीठापन होगा जबरदस्त

हिसार (वि.): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के कृषि विज्ञानियों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच 160 विकिसत की है। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है।इस किस्म के रोपण के 300 दिनों में ही खांड का अंश उच्च स्तर का (18.55 फीसद) होता है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के विज्ञानियों ने विकसित किया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना व अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

गन्ने की उन्नत किस्म सीओएच 0160 की फसल का फाइल फोटो।

किस्म की यह है खासियत

सीओएच 160 किस्म का तना मध्यम आकार का मोटा होता है जिसमें बड कुशन होता है। इसकी पत्तियां गहरी हरी व मध्यम चौड़ी पत्ती वाली कैनोपी होती हैं और इसके पत्ते झुके हुए होते हैं। इनमें वोबिन के आकार के इंटर्नोड्स होते हैं। इसका तना ठोस होता है जिसमें छेद न के बराबर होते हैं जिससे इसमें रस की मात्रा अधिक होती है। इस किस्म की 838 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसतन पैदावार आंकी गई है। इसके अलावा यह किस्म गिरती नहीं है और मोडी फसल भी ली जा सकती है।

चीनी मिलों को चाहिए जल्द पकने व अधिक शर्करा वाली किस्म

प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सडन रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है जो लाल सडन, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह चोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है। जल्दी पकने के कारण मिलों में भी इसके लिए शुरूआत से ही अधिक मांग रहती है।

किस्म विकसित करने में इन विज्ञानियों की मेहनत लाई रंग इस किस्म को विकसित करने में डा. एएस मेहला, डा. एसपी कादियान और डा. एमसी कंबोज जबकि सहयोगियों में डा. एचएल सैहतिया, डा. राकेश मेहरा, डा. समर सिंह, डा. विजय कुमार, डा. मेहर चंद, डा. रण सिंह और डा. सरोज जयपाल शामिल रहे। इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डा. रमेश कुमार और डा. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

> सीओएच 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो शरद ऋतु और वसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में सिफारिश की गई एनपीके की मात्रा 25 फीसद तक अधिक डाल सकते हैं ताकि उत्पादन अधिक हासिल हो सके।
>
> डा. बीआर कांबोज, कुलपति, एचएयू

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	7-7-21	4	7-8

गन्ने की उच्च शर्करा वाली किस्म विकसित, 838 क्विंटल होगी पैदावार

■ चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी गन्ने की नई किस्म

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली व अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विवि के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विवि द्वारा विकसित इस किस्म को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इनकी मेहनत लाई रंग

इस किस्म को विकसित करने में डॉ. एएस मेहला, डॉ. एसपी कादियान और डॉ. एमसी कंबोज जबकि सहयोगियों में डॉ. एचएल रेहतिया, डॉ. राकेश मेहरा, डॉ. समर सिंह, डॉ. विजय कुमार, डॉ. मेहरचंद, डॉ. रणसिंह और डॉ. सरोज जयपाल शामिल थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7.7.21	4	6

अच्छी पैदावार के लिए वैज्ञानिक तरीके अपनाएं : डॉ. जगदेव

हिसार। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के तत्वावधान में मंगलवार को गांव कुम्हारिया में ग्वार उत्पादन तकनीकी पर एक किसान शिविर किया गया। इसमें किसानों को ग्वार फसल के साथ-साथ नरमा कपास व अन्य फसलों की वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के उपायों पर चर्चा की गई।

एचएयू के शस्य विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त पूर्व अध्यक्ष डॉ. जगदेव सिंह ने कहा कि ग्वार की फसल अधिकतर बरानी इलाकों में बोई जाती है, इसलिए किसानों को वह हर उपाय अपनाना होगा, जिससे भूमि की जल धारण क्षमता में बढ़ोतरी हो सके। इसके लिए उन्होंने खेत की गहरी जुताई करने, जैविक खादों का अधिक इस्तेमाल करने, फसल अवशेषों को जलाने की बजाए भूमि में दबाने, खरपतवार नाशी दवाओं के प्रयोग के स्थान पर दो बार निराई गुड़ाई करने जैसे कई उपाय सुझाए। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	7.7.21	2	3-6

एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की गन्ने की उच्च शर्करा वाली किस्म सीओएच 160

838 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होगी औसतन पैदावार

एचएयू के वीसी ने कहा- प्रदेश के लिए वरदान साबित होगी जल्दी पकने वाली किस्म सीओएच 160

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष गन्ने की उन्नत अगेती किस्म सीओएच 160 विकसित की है, जो प्रदेश के किसानों व चीनी मिलों के लिए वरदान साबित होगी। यह किस्म जल्द पकने वाली और अधिक शर्करा वाली है और किसानों की आमदनी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र उचानी, करनाल के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 86वीं बैठक में हरियाणा प्रदेश के लिए अधिसूचित किया गया है।

किस्म विकसित करने में इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

किस्म को विकसित करने में डॉ. ए.एस. मेहला, डॉ. एस.पी. कादियान और डॉ. एम.सी. कंबोज जबकि सहयोगियों में डॉ. एच.एल. सेहतिया, डॉ. राकेश मेहरा, डॉ. समर सिंह, डॉ. विजय कुमार, डॉ. मेहर चंद, डॉ. रण सिंह और डॉ. सरोज जयपाल शामिल थे। इसके अलावा इस किस्म की अनुमोदित प्रक्रिया व हरियाणा में इस किस्म का रकबा बढ़ाने में डॉ. रमेश कुमार और डॉ. सुधीर शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी।

किसान शरद और वसंत में भी ले सकते हैं फसल

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीओएच 160 एक बहुमुखी किस्म है, जो शरद ऋतु और वसंत दोनों ऋतुओं में बोई जा सकती है। इस किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में सिफारिश की गई एनपीके की मात्रा 25 प्रतिशत तक अधिक डाल सकते हैं ताकि उत्पादन अधिक हासिल हो सके। यदि इसे व्यापक पंक्ति अंतर में रोपण किया जाता है तो यह यांत्रिक कटाई के लिए भी उपयुक्त किस्म है। यह लाल सड़न और अन्य बीमारियों के प्रचलित रोग के लिए प्रतिरोधी है। एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि प्रदेश में चीनी उद्योग को जल्दी पकने वाली और उच्च शर्करा वाली किस्म की सख्त जरूरत होती है, जिसमें लाल सड़न रोग और प्रमुख कीट-पतंगों के प्रचलित रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। इससे पहले प्रदेश में सीओ 0238 प्रमुख किस्म है, जो लाल सडन, स्मट और अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो गई है। यह चोटी भेदक और अन्य कीट-पतंगों के लिए भी अतिसंवेदनशील हो गई है। इसलिए सीओएच 160 किस्म किसानों की जरूरतों और उद्योगों की मांग को ध्यान में रखकर विकसित की गई किस्म है। जो इनके लिए अति उत्तम है और प्रदेश में प्रमुख किस्म सीओ 0238 के लिए उपयुक्त प्रतिस्थापन है।